अनुमोदित

2018-19

अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल

अंशकालीन प्रमाण–पत्र (छः माह)

विषयः–पंचकर्म

संकाय – आयुर्विज्ञान संकाय

(नियम, परीक्षा योजना एवं पाठ्यक्रम)

सत्र 2018–19

आवश्यकताः – आयुर्वेदिक पद्वतियों वाले लोगों के लिए प्रारंभिक तथा अत्यंत महत्वपूर्ण चिकित्सा पद्वति जिसे पंचकर्म के नाम से जाना जाता है इस पाठ्यक्रम में समाहित है प्रांरम्भिक सत्र में आयुर्वेदिक अवधारणाओं की गहराई से जानकारी पंचकर्म मालिस उपचार प्रक्रिया रोगों के निदान तथा केरल की विशेष मालिश, शिरोधारा तथा शात्रोक्त आयुर्वेदिक पंचकर्म तकनीकी का पाठ्यक्रम में समावेश किया गया है।

आयुर्वेद तथा आधुनिक चिकित्सा विज्ञान के बदलते मूल्यों के साथ–साथ अब इस तथ्य को पर्याप्त मान्यता प्राप्त हो चुकी है कि जन स्वास्थ्य का उन्नयन तथा रोगों की रोकथाम रोग निदान उपचार पंचकर्म केवल आयुर्वेदिक चिकित्सा शास्त्र न होकर जीवन का विज्ञान है।

पंचकर्म के द्वारा ही प्रयोजन का प्रथम उद्देश्य स्वस्थ्य व्यक्ति के स्वस्थ्य को बनाये रखने हेतु ऋतुचर्या के अनुसार पंचकर्म निर्दिष्ट है जिससे रोग उत्पन्न होने से पूर्व ही दोषों को शरीर से बाहर निकाल दिया जाता है जिससे त्रिदोषों के साम्य स्थापित होकर आरोग्य की प्राप्ति होती है।

उद्देश्य :– आयुर्वेद चिकित्सा में लगभग सभी रोग में पंचकर्म निर्दिष्ट है। केवल उरूस्तम्भ को छोड़कर सभी रोगो में पंचकर्म के महत्व, गौरव तथा उपयोगिता का बोध होता है।

महत्व :–

1. स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य के संरक्षण हेतु ।
2. स्वास्थ्य के असाधारण गुण प्राप्ति के लिए।
3. रोगी व्यक्ति के रोग के प्रशमन हेतु।

15/5

15-5-18

पाठ्यक्रम के लिए योग्यता

1. मान्यताप्राप्त बोर्ड से किसी भी विषय से 12वीं उत्तीर्ण।
2. आयु का कोई बन्धन नहीं।
3. किसी भी विभाग में नियुक्त कर्मचारी भी पाठ्यक्रम में भाग ले सकता है।
4. अवधि – छः माह (एक सेमेस्टर)
5. इस पाठ्यक्रम में 4 पेपर होंगे। प्रत्येक पेपर में 5 इकाई होंगी।
6. यह पाठ्यक्रम अध्यादेश क्र. 37 से संचालित होगा।

प्रश्नपत्र क्रमांक	प्रश्नपत्र का नाम	प्रति सप्ताह पाठ्य काल	क्रेडिट	परीक्षा अवधि	अधिकतम अंक		
					आंतरिक मूल्यांकन	वि.वि. परीक्षा	योग
प्रथम सेमेस्टर							
प्रश्नपत्र – 1	आयुर्वेद के मूल सिद्वांत	4	4	3 घण्टें	30	70	100
प्रश्नपत्र – 2	पंचकर्म के पूर्व कर्म	4	4	3 घण्टें	30	70	100
प्रश्नपत्र – 3	वमन विरेचन संसर्जन	4	4	3 घण्टें	30	70	100
प्रश्नपत्र – 4	वस्ति एवं नस्य	4	4	3 घण्टें	30	70	100
प्रायोगिक –1		2	2	4 घण्टें	–	100	100

15.5.18

अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र)

अंशकालीन प्रमाण–पत्र पाठ्यक्रम

प्रथम प्रश्न पत्र – आयुर्वेद के मूल सिद्वांत

अधिकतम अंक– 100 उर्त्तीणांक– 40
आंतरिक मूल्याकंन–30
बाह्य मूल्याकंन– 70

उद्देश्य – 1.स्वस्थ्य व्यक्ति के स्वास्थ्य का रक्षण।
2. आतुर के विकार प्रशमन।

आवश्यकता – वर्तमान में तेजी से बढ़ रहे रोगों के इलाज की उत्तम तथा सस्ती चिकित्सा पद्वति होने से लोगों में अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो रही है।

महत्व :– वर्तमान परिपेक्ष्य में जो रोगी अनेक प्रकार की चिकित्सा पद्धति में रोग नहीं होते हैं वह आयुर्वेद चिकित्सा में संपूर्ण लाभ प्राप्त करते हैं ।

इकाई– 1 आयुर्वेद का सिद्वांत, आयुर्वेद की परिभाषा, आयुर्वेद के स्तम्भ (वातपित्त कफ) की सम्यक् एवं विस्तृत जानकारी आयुर्वेद का उद्देश्य।

इकाई– 2 स्वस्थ्य का विचार, स्वस्थ के लक्षण, स्वास्थ्य एवं व्याधि, दिनचार्य, शरीर परिमार्जन

इकाई– 3 ऋतुचर्या, ऋतुओं के अनुसार दोषों का संचय एवं प्रकोप प्रशमन, ऋतुओं अनुसार संशोधन कर्म , ऋतुसन्धि आदि का विस्तृत वर्णन।

इकाई– 4 पंचकर्म का परिचय, पंचकर्म की परिभाषा, पंचकर्म का प्रयोजन एवं महत्व,

इकाई– 5 पंचकर्म के प्रभाव की सीमा, पंचकर्म और शोधन। पंचकर्म प्रयोग विषय, काल विचार, सामान्य चिकित्सा सिद्वान्त, शोधन का महत्व, वर्तमान में पंचकर्म की उपादेयता।

संदर्भ :–

1. सुश्रुत संहिता।
2. चरक संहिता।
3. भैषज्य रत्नावली।
4. भाव प्रकाश।
5. काय चिकित्सा :– कविराज रामरक्ष
6. भिषक कर्मषिद्वि – पं. रमानाथ द्विवेदी

15-5-18

अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र)

अंशकालीन प्रमाण–पत्र पाठ्यक्रम

द्वितीय प्रश्न पत्र – पंचकर्म के पूर्व कर्म

अधिकतम अंक– 100 उर्त्तीणांक– 40
आंतरिक मूल्याकंन–30
बाह्य मूल्याकंन– 70

उद्देश्य – साध्य, असाध्य रोगों का प्रभावी एवं स्थाई इलाज।

आवश्यकता – शहरी और ग्रामीण परिवेश में स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा तथा रोग प्रशमन हेतु महत्वपूर्ण चिकित्सा पद्वति।

महत्व :– देशी चिकित्सा पद्वति के बढ़ते – प्रभाव को जन–जन तक पहुँचाने का पचंकर्म उचित माध्यम है ।

इकाई– 1 पंचकर्म के पूर्वकर्म, स्नेहन की परिभाषा परिचय, स्नेहों के प्रकार, चार उत्तम स्नेह, स्नेह की प्रविचारणाएँ, स्नेह के योग्य अयोग्य पुरूष, स्नेह पान विधि, स्नेह पान के जीर्णमान, जीर्ण, पच्चमान लक्षण, सम्यक् स्निग्ध लक्षण असम्यक् स्निग्ध लक्षण।

इकाई– 2 अभ्यंग, मर्दन उद्वर्दन, उत्सादन, धाराकर्म क्षीरधारा, तेलधारा, तक्रधारा, कर्णपूरण अक्षितर्पण, शिरोवस्ति [redacted], गण्डूष, कवल।

इकाई– 3 स्वेदन परिचय, परिभाषा, उपयोगिता, महत्व, स्वेदन द्रव्यों के गुण कर्म, स्वेदन कारक द्रव्य, उपयोग भेद से स्वेदन द्रव्य, स्वेदन के योग्य रोगी, अयोग्य रोगी, स्वेदनविधि स्वेदन से भेद।

इकाई– 4 स्वेदन की विभिन्न विधियां, निराग्नि स्वेदन की विधियां, स्वेदन के हीन एवं अतियोग लक्षण, स्वेदन के व्यापद् व निराकरण आदि का वर्णन।

इकाई– 5 पिण्ड स्वेद (पत्रपिण्ड स्वेद) षष्ठिशाली स्वेद, काय सेक अन्न लेप, शिरोकोप चूर्ण , जम्बीर पिण्ड स्वेद, वाष्प स्वेद, बालुका स्वेद, धान्याकलधारा, कटि वस्ति,

संदर्भ

1. आयुर्वेदीय पंचकर्म विज्ञानः– श्रीधर कस्तूरे।
2. पंचकर्म–चिकित्सा–विज्ञानम् (केरलीय) :– देवराज टी.एल.
3. शरीर रचना एवं क्रिया विज्ञान :– डॉ. मजित बिड़दी ओमेगा पब्लिकेशन 4378/4बी, जी–4 जेएमडी हाऊस गब्ली मुरारी लाल असादी रोड दरीया गंज, नई दिल्ली।
4. क्रिया शरीर, प्रो. डॉ. कृष्ण कान्त पाण्डे, प्रकाशक चौखम्बा अकादमी वाराणसी तृतीय संस्करण 2007।
5. क्रिया :– रजीत राय देसाई।

अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र)

अंशकालीन प्रमाण–पत्र पाठ्यक्रम

तृतीय प्रश्न पत्र – वमन विरेचन संसर्जन

अधिकतम अंक– 100 उर्त्तीणांक– 40
आंतरिक मूल्याकंन–30
बाह्य मूल्याकंन– 70

उद्देश्य – साध्य, असाध्य रोगों का प्रभावी व स्थाई इलाज।

आवश्यकता – शहरी और ग्रामीण परिवेश में स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा तथा रोग प्रशमन हेतु महत्वपूर्ण चिकित्सा पद्वति।

महत्व :– देशी चिकित्सा पद्वति के बढ़ते – प्रभाव को जन–जन तक पहुँचाने का पचंकर्म उचित माध्यम है ।

इकाई– 1 वमन परिचय, परिभाषा, महत्व एवं प्रयोजन, वमन के योग्य रोगी, वमन के अयोग्य रोगी, वमन द्रव्यों के गुण कर्म, वमनोपग द्रव्य, वमन द्रव्यों की कार्मुकता, वमनविधि, वमन के सम्यक् हीन एवं अतियोग का वर्णन, वमन के व्यापद् का वर्णन।

इकाई– 2 वमनोत्तर पश्चात कर्म, वमन कार्य युक्त के लक्षण, वमन क्रिया का प्रभाव वमन द्रव्यो का परिचय।

इकाई– 3 विरेचन परिचय, परिभाषा, महत्व, प्रयोजन आदि का वर्णन, विरेचन द्रव्यों के गुण, विरेचन के योग्य रोग व रोगी, विरेचन के अयोग्य रोग व रोगी, विरेचन के भेद, विरेचन विधि का वर्णन।

इकाई– 4 संसर्जन कर्म, विरेचन के हीन योग के लक्षण, विरेचन के अतियोग के लक्षण, विरेचन की कार्मुकता विरेचन द्रव्यों का वर्णन।

इकाई– 5 चरकोक्त विरेचन चतुरंगुल (अमलतास) के विरेचन योग सुधा (स्नुही) के विरेचन योग, दंती–द्रवंती के विरेचन योग, विरेचन औषधियों की कार्मुकता।

संदर्भ

1. क्रिया शरीर, प्रो. डॉ. कृष्ण कान्त पाण्डे, प्रकाशक चौखम्बा अकादमी वाराणसी तृतीय संस्करण 2007।
2. क्रिया :– रजीत राय देसाई।
3. आयुर्वेदीय पंचकर्म विज्ञान :– वैध श्रीधर कस्तूरे
4. आयुर्वेदीय पंचकर्म विज्ञान :– डॉ. मुकुन्दीलाल द्विवेदी
5. प्रायोगिक पंचकर्म :– यू.एस. निगम

15-5-18

अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र)

अंशकालीन प्रमाण–पत्र पाठ्यक्रम

चतुर्थ प्रश्न पत्र – वस्ति एवं नस्य

अधिकतम अंक– 100 उर्त्तीणांक– 40
आंतरिक मूल्याकंन–30
बाह्य मूल्याकंन– 70

उद्देश्य – साध्य, असाध्य रोगों का प्रभावी व स्थाई इलाज।

आवश्यकता – शहरी और ग्रामीण परिवेश में स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा तथा रोग प्रशमन हेतु महत्वपूर्ण चिकित्सा पद्वति।

महत्व :– देशी चिकित्सा पद्वति के बढ़ते – प्रभाव को जन–जन तक पहुँचाने का पचंकर्म उचित माध्यम है ।

इकाई– 1 वस्ति परिचय, परिभाषा उपयोगिता एवं महत्व वस्ति के प्रकार, आस्थापन वस्ति के योग्य रोग व रोगी, आस्थापन वस्ति के अयोग्य रोग एवं रोगी अनुवासन वस्ति के योग्य रोग–रोगी, अनुवासन वस्ति के अयोग्य रोग–रोगी।

इकाई– 2 वस्ति यंत्र का सचित्र वर्णन, वस्ति नेत्र के दोष, वस्ति पुटक के दोष, वस्ति निर्माण विधि, वस्ति दान विधि का वर्णन, निरूहण वस्ति सम्यक् योग, अयोग, अतियोग लक्षणों का वर्णन, अनुवासन वस्ति अनुवासन वस्ति का प्रयोग काल।

इकाई– 3 स्नेह वस्ति के उपद्रव व प्रतिकार, मात्रा वस्ति, मात्रा वस्ति के योग्य व्यक्ति, उत्तर वस्ति के योग्य – अयोग्य व्यक्ति, वस्ति व्यापत्तियां, वस्ति प्रयोग जन्य उपद्रव, वस्ति की कार्मुकता।

इकाई– 4 मधु तैलिक वस्ति, निरूह वस्ति कृमिघ्न वस्ति, लेखन वस्ति, बृहद वस्ति, सर्व रोगहर निरूह वस्ति, वातघ्न वस्ति, पित्तघ्न वस्ति, कफघ्नवस्ति।

इकाई– 5 नस्य सामान्य परिचय नस्य की परिभाषा, प्रयोजन, महत्व, नस्य कर्म के योग्य रोगी, नस्यकर्म के अयोग्य रोगी, नस्य के प्रकार, नस्य प्रयोग विधि, नस्य के सम्यक् योग, हीन योग, अतियोग के लक्षण, नस्य व्यापद्, नस्य कार्ममुक्ता।

संदर्भ

1. आयुर्वेदीय पंचकर्म विज्ञान :– वैध श्रीधर कस्तूरे
2. आयुर्वेदीय पंचकर्म विज्ञान :– डॉ. मुकुन्दीलाल द्विवेदी
3. प्रायोगिक पंचकर्म :– यू.एस. निगम

15-5-15

अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र)

अंशकालीन प्रमाण–पत्र पाठ्यक्रम

प्रायोगिक– एक

1.	प्रोजेक्ट फाईल	– अंक 20
2.	मौखिक परीक्षा	– अंक 40
3.	सतत् समग्र मूल्याकंन	– अंक 40

"अ" लिखित

1. शिरो अभ्यंग
2. पादभ्यंग
3. उद्वर्तन
4. पत्रपोटली
5. कटिवस्ति
6. ग्रीवावस्ति
7. जानुवस्ति
8. नस्य
9. नेत्र पूरण
10. कर्ण पूरण

15.5.18